

आदेश पत्रक - ता०.....से.....तक

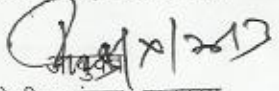
जिला....., सं०....., सन् १९.....

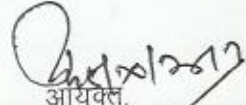
केस का प्रकार.....

आदेश की क्रम संख्या कीस तारीख १	आदेश और पदाधिकारी का हस्ताक्षर २	आदेश पर की गई कार्रवाई के बारे टिप्पणी, तारीख-सहित ३
	<p style="text-align: center;"><b>न्यायालय आयुक्त कोशी प्रमंडल, सहरसा</b></p> <p style="text-align: center;"><b>भूमि विवाद अपील वाद संख्या 348/2013</b></p> <p style="text-align: center;">विलट यादव — अपीलार्थी</p> <p style="text-align: center;">वनाम</p> <p style="text-align: center;">दुर्गाप्रसाद यादव एवं अन्य — रेस्पोंडेन्ट्स</p> <p style="text-align: center;"><b>--:आदेश:--</b></p> <p>प्रस्तुत अपील वाद अपीलकर्ता के द्वारा भूमि सुधार उप-समाहर्ता, निर्मली (सुपौल) के आदेश दिनांक: 15.06.2013 ई० अंदर वाद संख्या-115/12-13 के विरुद्ध खिलाफ रेस्पोंडेन्ट्स के दाखिल किया गया है।</p> <p>वाद पुकारा गया। अपीलार्थी के विद्वान अधिवक्ता का नामांकन विन्दु पर सुना। अभिलेख पर रक्षित कागजात का अवलोकन किया।</p> <p>अपीलार्थी के विद्वान अधिवक्ता का कथन है कि प्रस्तुत वाद में हम अपीलार्थी एवं रेस्पोंडेन्ट प्रथम पक्ष एक ही खानदान के संयुक्त परिवार के सदस्य हैं। अपीलार्थी का कथन है कि परिवार में आज तक कोई लिखित एवं मौखिक बँटवारा नहीं हुआ है जबकि रेस्पोंडेन्ट प्रथम पक्ष का कहना है कि मौखिक रूप से दिनांक 01.06.75 को परिवार में बँटवारा हो गया एवं उसी के मुताबिक अपने अपने हिस्से की जमीन पर हकदार एवं दखलकार हो गये लेकिन कोई कागजात अभिलेख पर बँटवारा से संबंधित संघारित नहीं है, जबकि निम्नन्यायालय के आदेश के परिशीलन से ज्ञात होता है कि रेस्पोंडेन्ट/वादी कथन किए हैं कि वर्ष 1975 ई० का एक खिस्ता पंचनामा प्रस्तुत किए हैं, जिसमें दोनों भाईयों के बीच अंकुर बँटवारा की बात कही गई है। अपीलार्थी/प्रतिवादी के नाम खरीदगी केवाला 1975 ई० के पहले का है जो बँटवारा के पूर्व का होना प्रतीत होता है।</p> <p>मुताबिक बँटवारा सुदा एराजी वो प्रस्तुत वाद में विवादी जमीन से संबंधित अंचलाधिकारी, मरौना के द्वारा की गई कार्रवाई एवं निम्नन्यायालय भूमि सुधार उप समाहर्ता, मरौना द्वारा दिये गये आदेश दिनांक 15.06.13</p>	

सही, दुरुस्त नियम एवं विधान के अनुकूल परिलक्षित होता है, जो नैसर्गिक न्याय से पुष्ट है। अतः प्रस्तुत अपील वाद को नामांकन की अवस्था में वाद के गुण एवं दोष को देखते हुए खारिज किया जाता है। इसी के साथ वाद निस्तारित किया जाता है।

लेखापित्त एवं संशोधित।

  
कोशी प्रमंडल, सहरसा

  
आयुक्त,

कोशी प्रमंडल, सहरसा